

न हो, पूरी तरह विकसित न हो 2. बाणि. जिसके भुगतान की निर्धारित अवधि अभी पूरी नहीं हुई हो 3. मनो. जो बौद्धिक योग्यता की दृष्टि से अभी सक्षम न हो।

अपरिपक्वता स्त्री. (तत्.) परिपक्व न होने की अवस्था।

अपरिभाषित वि. (तत्.) [अ+परिभाषित] 1. जो लक्षण, स्वरूप गुण आदि की दृष्टि से परिभाषित न हो या जिसकी परिभाषा न की गई हो, जैसे- अभी तक अपरिभाषित शब्दों पर शब्दकोश की दृष्टि से विचार करना अपेक्षित है।

अपरिभाष्य वि. (तत्.) [अ+परिभाष्य] 1. जिसकी परिभाषा सही रूप में न जा सकती हो, परिभाषा के अयोग्य। ब्रह्म अपरिभाष्य है।

अपरिमाण वि. (तत्.) [अ+परिमाण] 1. जिसका कोई परिमाण न हो, बिना नाप तौल का 2. जिसके आकार-प्रकार की कोई सीमा न हो, असीमित पुं. परिमाण साहित्य।

अपरिमित वि. (तत्.) अत्यधिक, असीम, बेहद; असंख्य, अगणित।

अपरिमेय वि. (तत्.) 1. जो नापा या कूता न जा सके 2. जिसका क्षय न हो।

अपरिमेय संख्या स्त्री. (तत्.) [अपरिमेय-संख्या] गणि. वह संख्या जिसे न तो किसी पूर्णांक के रूप में और न ही पूर्णांक के भागफल के रूप में व्यक्त करना संभव न हो जैसे- irrational number

अपरिनिश्चित वि. (तत्.) बट्टेखाते डाल दी गई राशि written off

अपरिवर्जनीय वि. (तत्.) अपरिहार्य, जिसे छोड़ा या त्यागा नहीं जा सके।

अपरिवर्तनीय वि. (तत्.) 1. जो परिवर्तन के योग्य न हो, जिसे बदला न जा सके 2. नित्य, सदा एक रूप में रहने वाला विलो. परिवर्तनीय।

अपरिवर्तित वि. (तत्.) 1. जिसमें कोई परिवर्तन न हुआ हो 2. ज्यों का त्यों विलो. परिवर्तित।

अपरिवर्ती वि. (तत्.) जो स्थिर, नियत या चर न हो।

अपरिवर्ती गति स्त्री. (तत्.) गणि. वह गति जिसमें दोनों रेखिक वेग तथा कोणीय योग अचर रहते हों।

अपरिवर्त्य वि. (तत्.) [अ+परिवर्त्य] 1. जो परिवर्तनीय न हो 2. न बदलने योग्य, अटल 3. जिसे न बदला जा सकता हो, जैसे- अपरिवर्त्य नियम।

अपरिवर्त्यता स्त्री. (तत्.) [अपरिवर्त्य+ता प्रत्यय] 1. जिसमें परिवर्तित नहीं होने का गुण या स्थिति हो 2. परिवर्तनशीलता का अभाव 3. अपरिवर्तनशीलता।

अपरिवृत वि. (तत्.) जो चारों ओर से घिरा या ढका न हो, खुला हुआ, अव्याप्त।

अपरिवृत्त वि. (तत्.) 1. अपरिवर्तित, जिसे घुमाया न गया हो 2. असमाप्त।

अपरिष्कार पुं. (तत्.) [अ+परिष्कार] 1. जिसका परिष्कार न हुआ हो, बिना परिष्कार का 2. संस्कार का अभाव 3. सज्जा का अभाव विलो. परिष्कार।

अपरिष्कृत वि. (तत्.) जिसका परिष्कार या परिशोधन न हुआ हो, जिस की सफाई न हुई हो, असज्जित, भोंड़ा, भट्ठा, असभ्य, संस्कार हीन।

अपरिस्राविता स्त्री. (तत्.) [अ+परिस्राविता] जल की वह स्थिति जब उसे बहा कर बाहर न निकाल कर अंदर ही रखा जाय जैन. वे नियम या आचरण जब किसी साधक के दोषों को सुनकर फिर किसी के पूछने पर भी उन्हें व्यक्त न करना।

अपरिहरणीय वि. (तत्.) [अ+परिहरणीय] 1. जो परिहरण करने के योग्य न हो 2. जिसका त्याग, खण्डन, निवारण करना संभव न हो 3. जिसका अपहरण न किया जा सकता हो।

अपरिहार पुं. (तत्.) न छोड़ने की स्थिति, निवारण का अभाव, अनिवारण।